वैश्विक सदभावना के लिए जरूरी है आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार-देव

आबू रोड, 5 जनवरी, निसं। नेपाल के पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह देव ने कहा कि वर्तमान स्थिति में अपने जीवन की दिनचर्या में सकारात्मक सोच को स्थान देना अति आवश्यक है। यदि हमें वैश्विक सद्भावना लाना है तो उसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। वे अपनी पत्नी कोमल राज्य लक्ष्मी देवी शाह तथा परिवार के सदस्यों के साथ ब्रह्माकुमारीज संस्था के शान्तिवन परिसर का अवलोकन के पश्चात संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर, बृजमोहन के साथ मुलाकात के दौरान कही।

आगे उन्होंने कहा कि भारत और नेपाल का पुराना रिश्ता है। भारत तथा नेपाल की संस्कृति में बहुत समानता है। गरीबी को समाप्त करने तथा आपसी सदभाव पैदा करने के लिए जरूरी है कि आत्म ज्ञान को जीवन का अंग बनाया जाये। उन्होंने 21 वीं सदी में भारत की भूमिका को सराहते हुए कहा कि पूरे विश्व में शांति के लिए भारत का अहम योगदान है। संस्था के अन्दर कार्यरत नेपाल के लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे जाकर नेपाल की गांवों और जनता को यहाँ दिये जा रहे ज्ञान और आध्यात्मिकता के प्रति प्रशिक्षित करें। शान्तिवन प्रवेश के तुरन्त बाद दादी प्रकाशमणि की समाधि स्थल पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि हम एक ईश्वर की संतान है और हमें अपने अस्तित्व को गहरायी से समझने की आवश्यकता है। पशुपतिनाथ परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर अपना दिव्य कार्य करा रहे हैं जिससे एक नयी बेहतर दुनियां का निर्माण हो सके। इसमें हम सभी को भागीदार बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि नेपाल एक शांतिप्रिय देश ही नहीं बल्कि आपसी सदभाव का मिसाल है। वर्तमान समय बढ़ रही चुनौतियों को समाप्त करने के लिए अध्यात्म को अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए। संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर ने स्वागत करते हुए कहा कि संस्था की कार्यप्रणाली लोगों में सदभावना, एकता तथा मूल्यनिष्ठ जीवन बनाने की प्रेरणा प्रदान करती है जिसपर चलकर लाखों लोग अपनी जिन्दगी को सुन्दर और सुखमय बना रहे हैं।

दिल्ली से आये प्यूरीटी मैगजिन के प्रधान सम्पादक ब्र0 कु0 बृजमोहन ने कहा कि आने वाले समय में एक राज्य, एक भाषा तथा एक परिवार होगा, जिसकी स्थापना स्वयं ईश्वर करा रहे हैं। इस अवसर पर संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

नेपाल राजा भव्य स्वागत: नेपाल के पूर्व राजा का शान्तिवन में स्वागत किया गया। इस अवसर पर संस्था के महासचिव ब्र0 कु0 निर्वेर, शान्तिवन प्रबन्धक ब्र0 कु0 भूपाल, कार्यकारी सचिव ब्र0 कु0 मृत्युंजय, ब्र0 कु0 मुन्नी, ब्र0 कु0 अशोक, ब्र0 कु0 मोहन सिंघल तथा दिल्ली के ब्र0 कु0 गोपाल भाई सहित संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनो ने पुष्प और गुलदस्ता भेंट कर स्वागत किया।

शान्तिवन देख हुए अभिभूत हुए पूर्व नरेश: शान्तिवन अवलोकन के दौरान डायमंड हॉल तथा सभी व्यवस्थाओं को देख कर अभिभूत हो उठे। इस व्यवस्था को दुनियां में फैलाने का आह्वान किया। इसके पश्चात वे भोजन कर माउण्ट आबू के लिए रवाना हो गये। नेपाल के पूर्व नरेश के साथ उनकी बहन तथा अन्य लोग मौजूद थे।

फोटो, 5एबीआरओपी, 1, 2, 3, 4, 5, 6 दादी प्रकाशमणिजी के समाधि स्थल पर पुष्प चढ़ाते नरेश, दादीजी से ईश्वरीय उपहार स्वीकार करते, दादीजी को पशुपतिनाथ का मोमेटों भेंट करते पूर्व नरेश तथा उनकी धर्मपत्नी।